RNI. MAHMUL02805/2010/33461

IMPACT FACTOR 6.20

ISSN 0976-0377

International Registered & Recognized
Research Journal Related to Higher Education for all Subjects

INTERLINK RESEARCH ANALYSIS

REFEREED & PEER REVIEWED RESEARCH JOURNAL

Issue : XX, Vol. II
Year - 10 (Half Yearly)
(July 2019 To Dec. 2019)

Editorial Office :
'Gyandeep',
R-9/139/6-A-1,
Near Vishal School,
LIC Colony,
Pragati Nagar, Latur
Dist. Latur - 413531.
(Maharashtra), India.

Contact : 02382 - 241913
09423346913,09637935252,
09503814000,07276301000

Website
www.irasg.com

E-mail :
interlinkresearch@rediffmail.com
visiongroup1994@gmail.com
mbkamble2010@gmail.com
drkamblebg@rediffmail.com

Publisher :
Jyotichandra Publication,
Latur, Dist. Latur.-415331
(M.S.) India

Price: ₹ 200/-

CHIEF EDITOR

Dr. Balaji G. Kamble
Research Guide & Head, Dept. of Economics,
Dr. Babasaheb Ambedkar Mahavidyalaya, Latur, Dist. Latur (M.S.)
Mob. 09423346913, 9503814000

EXECUTIVE EDITORS

Dr. Aloka Parasher Sen
Professor, Dept. of History & Classics,
University of Alberta, Edmonton,
(CANADA).

Dr. Laxman Satya
Professor, Dept. of History,
Lokhevan University, Loheavan,
PENSULVIYA (USA)

Dr. Huen Yen
Dept. of Inter Cultural
International Relation
Central South University,
Changsha City, (CHAINA)

Bhujang R. Bobade
Director, Manuscript Dept.,
Deccan Archaeological and Cultural
Research Insititute,
Malakpet, Hyderabad. (A.P.)

Dr. Omshiva V. Ligade
Head, Dept. of History,
Shivjagruti College,
Nalegaon, Dist. Latur. (M.S.)

Dr. Sadanand H. Gone
Principal,
Ujwal Gramin Mahavidyalaya,
Ghonsi , Dist. Latur. (M.S.)

Dr. G.V. Menkudale
Dept. of Dairy Science,
Mahatma Basweshwar College,
Latur, Dist. Latur.(M.S.)

Dr. Balaji S. Bhure
Dept. of Hindi,
Shivjagruti College,
Nalegaon, Dist. Latur.(M.S.)

DEPUTY-EDITORS

Dr. S.D. Sindkhedkar
Vice Principal
PSGVP's Mandals College,
Shahada, Dist. Nandurbar (M.S.)

Veera Prasad
Dept. of Political Science,
S.K. University,
Anantpur, (A.P.)

Dr. C.J. Kadam
Head, Dept. of Physics
Maharashtra Mahavidhyalaya,
Nilanga, Dist. Latur.(M.S.)

Johrabhai B. Patel,
Dept. of Hindi,
S.P. Patel College,
Simaliya (Gujrat)

CO-EDITORS

Sandipan K. Gaike
Dept. of Sociology,
Vasant College,
Kej, Dist. Beed (M.S.)

Dr. Shivaji Vaidya
Dept. of Hindi,
B. Raghunath College,
Parbhani,Dist. Parbhani.(M.S.)

Ambuja N. Malkhedkar
Dept. of Hindi
Gulbarga, Dist. Gulbarga,
(Karnataka State)

Dr. Shivanand M. Giri
Dept. of Marathi,
B.K. Deshmukh College,
Chakur Dist. Latur.(M.S.)

RNI. MAHMUL02805/2010/33461
Interlink Research Analysis
IMPACT FACTOR 6.20
ISSN 0976-0377
Issue:XX, Vol. II, July 2019 To Dec. 2019

INDEX

Sr. No	Title for Research Paper	Page No
1	Migrant Voices in Amitav Ghosh's "Shadow Lines" &" The Glass Palace" **Dr. Sachin S. Matode**	1
2	An Analysis of Higher Education in India **Dr. Baliram P. Lahane**	5
3	Study Of Heart Rate in College Students Owing to Examination Stress **Dr. Umakant P.Kamble**	11
4	A Study of Exclusion of Gender Concerns in Displacement Discourse with Respect to Landi Project Of Marathwada Region **Miss Usha Sarode**	16
5	लोकसाहित्य का स्वरूप और समाज **डॉ. महावीर रामजी हाके**	26
6	भारतीय साहित्य में अनुवाद **डॉ. अनिता शिंदे**	31
7	महाराष्ट्राच्या अर्थव्यवस्थेची तौलनिक अभ्यास **डॉ. गजानन एस. कुबडे**	34
8	भारतीय सेवा क्षेत्राच्या कामगिरीचा आढावा **डॉ. निलम छंगाणी**	42
9	"अहमदनगर जिल्हा परिषद अंतर्गत श्रीरामपूर तालुक्याचे महिला व बालकल्याण समितीचे उत्पन्न व खर्चाचा अभ्यास" **जयश्री सिनगर**	51
10	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर आणि लोकशाही **डॉ. महेश प्रल्हादराव गोमासे**	57
11	मुकनायक मधून गंगाधर पानतावणे यांनी मांडलेल्या डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांच्या जीवनकार्याचा अभ्यास **डॉ. उनमेष शेकडे**	62

RNI. MAHMUL02805/2010/33461
Interlink Research Analysis
IMPACT FACTOR 6.20
ISSN 0976-0377
Issue : XX, Vol. II, July 2019 To Dec. 2019

लोकसाहित्य का स्वरूप और समाज

डॉ. महावीर रामजी हाके
हिंदी विभाग,
कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय,
गंगाखेड जि.परभणी

5 Research Paper - Hindi

''साहित्य समाज का दर्पण होता है। यह उक्ति पुरानी होने पर आज भी सार्थक लगती है। मानव के साथ साहित्य आदिकाल से जुडा है। इसलिए वह मानव जीवन की प्रकृत अवस्थाओं का संप्रेषक भी है । मनुष्य अन्य प्राणियों से विकसित है । उसे वाणी का वरदान मिला है ।

साहित्य से सत्यं, शिवम, सुन्दरम् की प्रतिष्ठा होती है । साहित्य हमेशा हर प्राणी का हित देखता है। इसलिए अनेक विद्वानोंने साहित्य की परिभाषा करते हुए कहा है कि, ''हितेन सः साहित्य'' अर्थात हितके साथ जुडा हुआ साहित्य है। मनुष्य की वाणी तथा भावों की अनुभूति जब शब्दों में लिपिबध्द होती है, तब साहित्य की निर्मिती होती है। इसलिए साहित्य मानवीय भावों के अनुभूति की शाब्दिक अभिव्यक्ति है । प्राचीन काल से साहित्य की निर्मिती होती आ रही है । आधुनिक युग में साहित्य का विकास तेजी से हो रहा है ।

साहित्य और लोकसाहित्य लोकानुबंधी है । परंतु दोनों में भेदाभेद करते हुए उनमें कुछ तात्विक भेद पाये जाते हैं। डॉ. विद्या चौहान का कथन इसी बात पर प्रकाश डालता है कि ''साहित्य और लोकसाहित्य यद्यपि दोनों ही लोकानुबंधी है, तथापि दोनों में अंतर भी है। लोकजीवन से सारभूत जीवनी शक्तियों का ग्रहण करके साहित्य उसके धरातल से उपर उठकर अपने अस्तित्व का निर्माण करता है, किन्तु लोकसाहित्य इस धरातल को कभी नही पाता।

'लोकसाहित्य' यह शब्द 'लोक' और 'साहित्य' इन दो शब्दों से बना है। 'साहित्य' शब्द के आगे एक नया विशेषण 'लोक' जुडा हुआ हैं। सामान्यतः साहित्य परिष्कृत मन की अभिव्यक्ति है। लोकसाहित्य के अंतर्गत मानवी जीवन की सामाजिक, सांस्कृतिक आदि सभी बातें आती है।

ऐसे लोकसाहित्य की परिभाषा अनेक विद्वानोंने की है। डॉ. सत्येंद्र के अनुसार ''लोकसाहित्य के अंतर्गत वह समस्त बोली या भाषागत अभिव्यक्ति आती है, जिसमें आदिम मानव के अवशेष उपलब्ध हो। परम्परागत मौखिक कम से उपलब्ध बोली या भाषागत अभिव्यक्ति हो, जिसे किसी की कृति कहा जा सके, जिसे श्रृति ही माना जाता है और जो लोक मानव की प्रवृत्ति में समायी हुई है। कृतित्व हो किन्तु वह लोकमानस के सामान्य तत्त्वों से युक्त हो कि उसके किसी व्यक्तित्वकी कृति स्वीकार करे।

लोक साहित्य की व्यापकता के बारे में डॉ. श्रीराम शर्मा कहते है कि ''लोकसाहित्य की व्यापकता मानव के जन्म से लेकर मृत्यु तक है । आपका कथन है कि ''स्त्री-पुरूष, बच्चे, जवान, बूढें सभी लोगोंकी सम्मिलित सम्पत्ति लोक साहित्य है।

लोकसाहित्य का वर्गीकरण: साहित्य समाज का दर्पण है तो लोक साहित्य पूरे देहाती जनजीवन का दर्पण होगा । लोकसाहित्य वह मौखिकता का कोश है जिसमें जनजीवन की सभी बातें संग्रहित होती हैं। इसलिए ऐसे जनजीवन के मौखिक कोश के किसी विभाजन रेखा में बॉधना एक कठिन समस्या है । डॉ. श्रीराम शर्माने लोकसाहित्य को क्षेत्र की भौगोलिक, ऐतिहासिक, विशेषताओं, सामाजिक मान्यताओं एवं प्राप्त सामग्री को ध्यान में रखते हुए लोकसाहित्य का निम्नानुसार वर्गीकरण किया है ।

१. लोकगीत
२. लोकगाथा
३. लोकनाट्य
४. लोकोक्तियाँ, मुहावरें एवं पहेलियाँ

डॉ. बापूराव देसाई ने शैक्षणिक तथा सामाजिक दृष्टिकोण को मद्येनजर रखते हुए साहित्यिक स्तर पर लोक साहित्य का वर्गीकरण इस प्रकार किया है।

लोक साहित्य तालिका

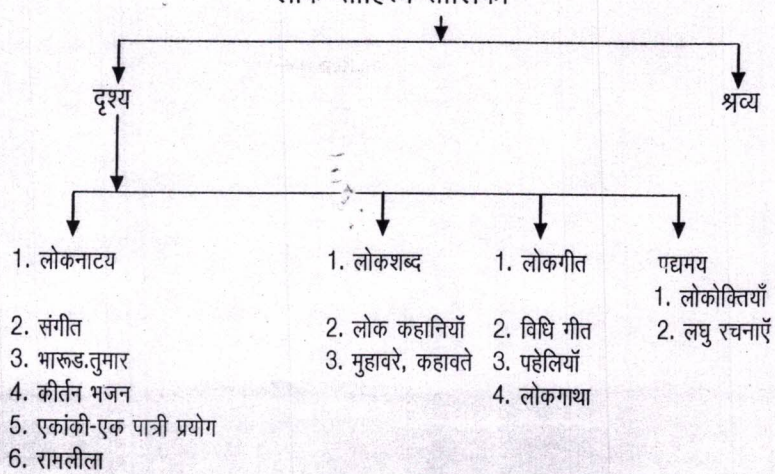

लोक साहित्य की प्राचिनता:

लोक साहित्य का सृजन मानव के अविर्भाव काल से हो रहा है। अंतः उसकी प्राचीनता पर प्रश्न चिन्ह नही लगाया जा सकता । हिंदी साहित्य के आदिकाल से लेकर आधुनिक कालतक लोक साहित्य की निरंतर निर्मिती हुई है। उसमें सूर, तुलसी, कबीर, बिहारी आदि का उल्लेख महत्त्वपूर्ण है। हिंदी की अनेकानेक आधुनिक कविताओं में लोकसाहित्य पनप रहा है। आज अनेक विद्वान क्षेत्रीय दृष्टिसे विभिन्न लोकबोलियों का अध्ययन करते हुए लोक साहित्य को पुष्ट करते हुए नजर आ रहे है।

लोक साहित्य की विशेषताएँ और महत्त्व:

लोकसाहित्य का अर्थ, प्रकृति, स्वरूप, भूमिका आदि पर लोक साहित्य की विशेषताएँ तय की जाती है। इसके साथ-साथ लोक संस्कृति पर भी उसकी विशेषताएँ निर्धारित की जा सकती है। डॉ. प्रभाकर पांडेजी लोक साहित्य की विशेषताएँ निम्ननुसार बताते है :

१. लोक साहित्य के अभिव्यक्ति का साधन बोली है, भाषा नही ।
२. वह जनता के कंठ में मौखिक अथवा अलिखित होता है।
३. लोक साहित्य एक पीढी से दूसरी तक संक्रमित होता है।
४. लोक साहित्य लोकमानस की अभिव्यक्ति है।
५. शिष्ट साहित्य एवं कला का मुख्य स्त्रोत लोक साहित्य है।
६. उसमें 'लोक' तत्त्व की प्रधानता होती है।
७. वह अध्ययन सामग्री एवं अध्ययन का विषय है।
८. उसमें जीवन के शाश्वत मूल्यों का संग्रह एवं परंपरागत सामुहिक संपदा होती है।

लोक साहित्य का महत्व:

ऐतिहासिक, सामाजिक, सांस्कृतिक धार्मिक, पौराणिक, भौगोलिक, नृशास्त्रीय तथा भाषा शास्त्रीय दृष्टि से लोक साहित्य का महत्व अत्यंत यथोचित है। किसी देश एवं जाति विशेष को जानने के लिए उसका अध्ययन अनिवार्य है। लोकसाहित्य का महत्त्व स्पष्ट करते हुए वैरियर एल्विन कहते है, उनके कथन का हिन्दी रूपान्तरन इस प्रकार है, ''लोक गीतोंका महत्त्व इसीलिए है कि इनके संगीत स्वरूप् और विषय में जनता का वास्तविक जीवन प्रतिबिंबित होता है, प्रत्युत इनमें समाजशास्त्रीय 'सोशियोलाजी' अध्ययन की प्रामाणिक एवं ठोस सामग्री हमें उपलब्ध होती है।

लोक साहित्य लोकभाषा में वर्णित होने के कारण इसका भाषा वैज्ञानिक महत्व भी है। साहित्यिक दृष्टि से भी लोक साहित्य महत्त्वपूर्ण है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि लोक साहित्य का अध्ययन बहु आयामी है। स्वतंत्रता के बाद भारत में लगभग सभी बोलियों के लोक

साहित्यका संकलन तथा अध्ययन करने के लिए विद्वान आकर्षित हो रहे हैं। हिंदी को विभिन्न बोलियों पर भी लेखकोंने यह कार्य किया है। महाराष्ट्र में मराठी, हिंदी के अनेक विद्वानोंने लोक साहित्य का अध्ययन करते हुए लोक साहित्य को पुष्ट किया है। परंतु नंदूरबार जिले के भील पावराओं की बोली भीली, पावरी पर एक साथ लोक साहित्यिक अध्ययन प्रस्तुत नही हुआ है। भीली, पावरी के लोक साहित्य का वर्गीकरण : भारतीय संस्कृति में विभिन्नता होते हुए एकता के दर्शन होते है। यह लोक संस्कृति ही लोकसाहित्य का वाहक है। लोकसाहित्य के विभिन्न अंग-प्रत्यांगो में लोक संस्कृति झलकती है। लोक साहित्य का वर्गीकरण लोक संस्कृति का विभाजन माना जा सकता है। लोक संस्कृति का क्षेत्र व्यापक है। लोक साहित्य यह एक बृहत विधा है। इसलिए लोकसाहित्य का वर्गीकरण करना एक मुश्किल कार्य है। फिर भी लोकसाहित्य को शिष्ट-साहित्यकी भॉति अनेक विद्वानोंने अध्ययन सुविधा के लिए वर्गीकृत किया है। उसी के परिप्रेक्ष्य में हम भील, पावरा समाज के लोक साहित्य का वर्गीकरण करने जा रहे है।

भील एवं पावरा दोनों आदिवासी समाज की आदिम जातियाँ है। उनकी बोली भीली, पावरी ज्यादातर हिंदी, गुजराती भाषा को स्पर्श करती है। दोनो बोलियों को हमने हिंदी की उपबोलियों के रूप में स्वीकारा है। डॉ. एम.बी. चौधरी भी लोक साहित्य और पावरी भाषा इसमें पावरी को हिंदी की उपबोली मानते है।इतना होते हुए भी भीली, पावरी बोली तथा उसका लोक साहित्य उपेक्षित रहा है। इसके प्रमुख कारण आदिवासी समाज एक होते हुए भी उसके अंतर्गत अनेक भिन्न जातियों में भेदाभेद, उचित नेतृत्व का अभाव, ज्यादातर भील, पावरा लोगो का जंगल, पर्वत पहाडियों में निवास होने के कारण उनमें जंगलीपन आना तो स्वाभाविक है, परंतु इसी बात को लेकर लोगों ने उनको उपेक्षित रखा, इसी से साहित्यिक, राजनीतिक लोग भी अछूते नही रहें। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद लोक साहित्य का वृक्ष बहुत विस्तृत फैला । उसकी छोटी-छोटी डालियाँ भी विकसित हुई।

भीली, पावरी लोकसाहित्य का विस्तार अत्यंत व्यापक है। वह उपरोक्त सभी विधाओं से समृध्द है। जन्म संस्कार से लेकर अनेक सामाजिक उत्सव, त्योहार, लोकोत्सव एवं निषादपूर्ण प्रसंगो पर भील, पावरा लोगों में गीत गाने की प्रथा प्रचलित है। पराक्रमी वीर पुरूष महिलाओं की कीर्ति बढाते हुए अनेक गाथाएँ भीली, पावरी में प्रसिध्द है। जैसे कि गांडा ठाकुर, राजा फानंटा, वीर खाज्या नाईक, बीरसा मुंडा, देवी यहमोगी, रानी काजल आदि के जयंती एवं पुण्यतिथि के अवसर पर ऐसी गाथाएँ ज्यादा तर गायी जाती है। उसी तरह से भीली, पावरी में सामाजिक, आध्यात्मिक, पौराणिक, ऐतिहासिक कहानियाँ मिल जाती है। भील, पावरा समाज में जो रोटाली पार्टी प्रसिध्द है। वह लोकनाटय का ही प्रकार माना जा सकता है। सामाजिक त्योहार, उत्सव लोकोत्सव आदि के अवसर पर जो भीली, पावरी लोकनृत्य प्रकट होते है, वह मन को मोहित एवं

आकर्षित करते हैं।

निष्कर्षत :

कहा जा सकता है कि साधारण लोकजीवन की विविध मान्यताएँ, अनुभूतियॉ, विचारधारा एवं परंपरा, श्रध्दा -अंधश्रध्दा जिस साहित्य में अभिव्यक्त होती है । वह साहित्य ही लोकसाहित्य कहा जा सकता है।

संदर्भ संकेत :-

१. लोकगीतों की सांस्कृतिक पृष्ठभूमिः डॉ.विद्या चौहान,पृष्ठ ६८.
२. लोकसाहित्य -डॉ.विद्या चौहान, पृष्ठ १०.
३. लोकसाहित्य, स्वरूप और मूल्यांकन - डॉ.श्रीराम शर्मा, पृष्ठ १२.
४. फोक सॉग्स आव मेकल हिलुस, भाग १ (भूमिका) डॉ.एलविन.